

=====

AVYAKT MURLI

20 / 10 / 75

=====

20-10-75 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

सर्व-प्राप्तियों को सहजानका सहज साधन - परहज

सर्व प्राप्तियों और शक्तियों का सहज अनुभव करानेवालेरूहानी पिता शिव बोलः-

अपनेको मास्टर ऑलमाइटी-अथॉरिटी समझतेहो? बाप द्वारा जो सर्व-शक्तियों की, सर्व नॉलज की, स्व पर राज्य करनेकी और विश्व पर राज्य करनेकी अथॉरिटी मिली है उस अथॉरिटी को कहाँ तक स्वरूप में लाया है? यह रूहानी नशा निरन्तर बुद्धि में रहता है? सारादिन का अन्दर स्व पर राज्य करनेकी अथॉरिटी कहाँ तक प्रैक्टिकल में रहती है, यह चैकिंग करतेहो? नॉलज की अथॉरिटी संपॉवरफुल स्वरूप कहाँ तक रहता है? सर्व प्राप्त हुई शक्तियों की अथॉरिटी माया-जीत व प्रकृति-जीत बननेमें कहाँ तक प्रैक्टिकल में अनुभव होती है? जब जिस शक्ति द्वारा जो कार्य कराना चाहो वही कार्य सफलता रूप में दिखाई दे- ऐसी अथॉरिटी अनुभव करतेहो

हो? बहद का बाप सभी बच्चों को आप समान ऑलमाइटी अथॉरिटी बनात हैं - तो बाप समान बन हो? कहाँ तक बन हैं, यह चैकिंग करना आता है? कई बच्च बापदादा स रूह-रूहान करत हुए यह एक बात बार-बार कहत हैं कि चक्र करत हैं, लकिन अपन को चक्र नहीं कर पात जानत हैं, मानत हैं, और सोचत हैं लकिन कर नहीं पात हैं। युक्ति चलात हैं लकिन मुक्ति नहीं पात हैं, उसका लिए क्या करें? इसका कारण एक छोटी-सी गलती व भूल है जो कि इस भूल-भुलैया का चक्कर में लाती है-वह क्या है? जैसा दवाई चाह कितनी भी बढ़िया हो और अपना डोज़ (Dose) भी ल रह हों लकिन एक बार भी परहज़ में स कोई एक वस्तु स्वीकार कर ली व जो स्वीकार करनी थी वह नहीं की तो दवाई द्वारा व्याधि स मुक्ति नहीं पा सकत हैं। इसी प्रकार यहाँ भी नॉलज़ रूपी दवाई ल हों अर्थात् नॉलज़ को बुद्धि में दौड़ात हैं-यह यथार्थ है या यह अयथार्थ है, यह करना चाहिए या नहीं करना चाहिय - यह राँग है या यह राइट है और यह हार है या जीत है - यह समझ बुद्धि में है? अर्थात् समय प्रमाण दवाई का डोज़ ल रह हों, रूह-रूहान कर रह हों, क्लास कर रह हों, सबा कर रह हों और यह सब डोज़ ल रह हों लकिन जो पहली-पहली परहज़ व मर्यादा है -

पहली परहज़ - 'एक बाप दूसरा न कोई' - इसी स्मृति में और समर्थी में रहना-यह मूल परहज़ निरन्तर नहीं करत हैं और ही कहीं न कहीं अपन को यह कह कर धोख में रखत हैं कि मैं तो हूँ ही शिव बाबा का, और मश है ही कौन? लकिन प्रैक्टिकल में ऐसा स्मृति-स्वरूप हो जो संकल्प में भी

एक बाप का सिवाय दूसरा कोई व्यक्ति व वैभव, सम्बन्ध-सम्पर्क वा कोई साधन स्मृति में न आयें। यह है कड़ी अर्थात् मुख्य परहज़। इस परहज़ में, अलबत्ता-होन-का कारण, मन-मत का कारण, वातावरण का प्रभाव का कारण या संगदोष का कारण निरन्तर नहीं रह सकतें। जितना अटक्शन दक्षा चाहिए उतना नहीं दत्त-हैं। अल्पकाल का लिए फुल अटक्शन रखत-हैं फिर धीर-धीर-‘फुल’ खत्म हो, अटक्शन हो जाता है। उसका बाद अटक्शन अनक प्रकार का टक्शन में चला जाता है। परिस्थितियों व परीक्षाओं-वश अटक्शन बदल टक्शन का रूप हो जाता है। इसी कारण जैसा-स्मृति बदलती जाती है तो समर्थी भी बदलती जाती है। ऑलमाइटी अथॉरिटी का बदल-माया का वशीभूत होन-का कारण वशीकरण मन्त्र काम नहीं करता अर्थात् युक्ति-मुक्ति नहीं दिलाती है। और फिर चिल्लात-हैं कि चाहत-भी हैं फिर क्यों नहीं होता? तो मूल परहज़ चाहिये-इस एक बात पर निरन्तर अटक्शन रखो।

दूसरी परहज़ - बाप न-तो अधिकार दिया है अपन-आप का मालिक बनन-का व रचयिता-पन का लकिन रचयिता बनन-का बजाय स्वयं को रचना अर्थात् दह समझ लत्त-हैं। जब रचयिता-पन भूलत-हो तब माया अर्थात् दह-अभिमान तुम रचयिता का ऊपर रचयिता बनती है अर्थात् अपना अधिकार रखती है। रचयिता पर कोई अधिकार नहीं कर सकता, विश्व का मालिक का ऊपर कोई मालिक नहीं बन सकता। माया का आग-रचना बन

जात॥हो और अधीन बन जात॥हो। तो इस मालिकपन की व अधिकारीपन की स्मृति स्वरूप रहन॥की परहज़ निरन्तर नहीं करत॥हो?

तीसरी परहज़ - बाप द्वारा सबका 'ट्रस्टी' बन॥हो? इस तन का भी ट्रस्टी हो, मन अर्थात् संकल्प का भी ट्रस्टी, लौकिक व अलौकिक जो प्रवृत्ति मिली है उसमें भी ट्रस्टी हो, लेकिन ट्रस्टी का बजाय गृहस्थी बन जात॥हो। गृहस्थी की दुर्दशा का मॉडल आप बनात॥हो। कौन-सा मॉडल बनात॥हो जो सभी तरफ स॥खिंचा रहता है, दूसरा गृहस्थी को गध॥का रूप में दिखाया है। अनक प्रकार का बोझ दिखाय॥गए हैं - ऐसा मॉडल बनात॥हो ना? जब गृहस्थी बन जात॥हो तो मणन का अनक प्रकार का बोझ हो जात॥हैं। सबस॥रॉयल रूप का बोझ है - वह 'मशी जिम्मवारी है इसको तो निभाना ही पड़णा' और कोई गृहस्थी ही तो अपनी कर्म-इन्द्रियों का वश हो अनक रस में समय गँवान॥का गृहस्थी तो बहुत हैं। आज कन-रस वश समय गँवाया, कल जीभ-रस वश समय गँवाया। ऐस॥गृहस्थी में फंसन॥का कारण ट्रस्टीपन भूल जात॥हो। यह तन भी मण नहीं, तन का भी ट्रस्टी हूँ। तो ट्रस्टी, मालिक का बिगर किसी भी वस्तु को अपन॥प्रति यूज़ नहीं कर सकत॥हैं। तो कर्म-इन्द्रियों का रस में मस्त हो जाना उसको भी गृहस्थी कहेंग॥न कि ट्रस्टी, क्योंकि श्रष्ठ स॥श्रष्ठ मालिक जिसका आप ट्रस्टी हो उनकी श्रीमत एक का रस में सदा एक-रस स्थिति में रहन॥की है। इन कर्म-इन्द्रियों द्वारा एक का ही रस लब्धा है। तो फिर अनक कर्म-इन्द्रियों द्वारा भिन्न-भिन्न रस क्यों लप्त॥हो? तो लौकिक व अलौकिक प्रवृत्ति में

गृहस्थी बन जातूहो। इसलियूअनकू प्रकार कू बूझ-जिसकू लियूबाप डायरकूशन दकूतूहूँ कि सब मकूको दूदू - वह बूझ कूर्य ही अपनूऊपर उठायूबूझ धारण करतूहुए उडूना चाहतूहो। लकूिन कर नूहीं पातूहूँ। तू इस परहूँ की कमी कू कारण युक्ति चलतूहो लकूिन मुक्ति नूहीं पातू हो।

बापदादा को भी ऐसूबकूँ पर तरस पडूता है। मास्टर सागर और एक अन्चली कू प्यासूहूँ। अरूथतू योग और ज्ञान दूवारा जो अनुभव की प्राप्ति होती है उस अनुभव की अन्चली कू प्यासूहूँ। इसलियूअब परहूँ को अपनाओ तू सर्व- प्राप्तियूँ सदा अनुभव हूँ। सर्व-प्राप्तियूँ की प्रूप्टी कू मालिक ऐसूबालक सो मालिक, प्राप्ति सूवंचित हूँ? यह तू बाप सूभी नूहीं दूखा जाता। तू अब 63 जन्मूँ कू गृहस्थी-पन कू संस्कार कूडू। तन कू और मन कू ट्रूस्टी बनू। सब बाप की जिम्मबूवारी है, मशी जिम्मबूवारी नूहीं, इस स्मृति सूहलूकू बन जाओ तू फिर जो सोचूंगूवही होगा अरूथतू हाई जम्प लगायूंगू। तू यह रूना चिल्लाना रूह- रूहान में परिवर्तन हो जायूगा। रूह-रूहान दूवारा रूहूँ में राहत भर सकूंगू। नूहीं तू कभी अपनी शिकायतूँ और कभी परिस्थितियूँ की शिकायतूँ इसमें ही रूह- रूहान का समय समाप्त कर दूती हूँ। तू अब शिकायतूँ को रूहानियत में बदली करू, तब संगमयुग कू सुखूँ को अनुभव करूंगू। समडूा?

ऐसूसदा रूहानियत में रहनूवालूकदम-कदम पर श्रीमत पर चलनूवालू ऐसूआज्ञाकारी, फरमानवरदार, और हर फरमान को स्वरूपा में लानूवालू

ऐस॥बाप का प्रिय ज्ञानी तू आत्मायें और योगी तू आत्मायें बच्चों को
बापदादा का याद-प्यार और नमस्त॥ अच्छा। ओम् शान्ति।

इस मुरली का सार

1. कई बच्चों की बापदादा स॥यह शिकायत है कि कुछ जानत॥मानत॥और
सोचत॥हुए भी कर क्यों नहीं पात॥हैं? सर्व प्राप्तियों को अपन॥जीवन में
अनुभव क्यों नहीं कर पात॥हैं? इसका कारण यह है कि ज्ञान-औषधि का
सबन करन॥का साथ-साथ धारणाओं रूपी परहज़ नहीं रखत॥हैं अर्थात्
ईश्वरीय मर्यादा में नहीं रहत॥हैं।

2. पहली परहज़ एक बाप दूसरा न कोई को भूल दूसरा कोई व्यक्ति, वैभव,
सम्बन्ध, सम्पर्क या साधन अपना लक्ष॥हैं, दूसरी परहज़ स्वयं को रचयिता
अर्थात् आत्मा समझन॥का बजाय रचना अर्थात् दह समझ लक्ष॥हैं, तीसरी
परहज़ ट्रस्टी का बजाय गृहस्थी बन जात॥हैं।

3. तो अब परहज़ को अपनाओ, शिकायतों को रूहानियत में बदली करो तो
ही संगम युग का सुखों का अनुभव कर सकेंग॥

QUIZ QUESTIONS

प्रश्न 1 :- बाबा न॥तीन परहज़ कौन सी बताई है?

प्रश्न 2 :- सबसे कड़ी परहज क्या है?

प्रश्न 3 :- स्मृति का बदल समर्थी कब बदल जाती है?

प्रश्न 4 :- हम माया का आग अधीन कब बन जात है?

प्रश्न 5 :- ट्रस्टीपन भूलन का क्या कारण है?

FILL IN THE BLANKS:-

{ बोझ, गृहस्थी-पन, चक्र, शक्ति, डायरक्शन, परिवर्तन, अथॉरिटी, चमज, राहत }

1 कई बच्च बापदादा स रूह-रूहान करत हुए यह एक बात बार-बार कहत हैं कि _____ करत हैं, लकिन अपन को _____ नहीं कर पात।

2 अब 63 जन्मों का _____ का संस्कार छोड़ो।

3 यह रोना चिल्लाना रूह- रूहान में _____ हो जायणा। रूह-रूहान द्वारा रूहों में _____ भर सकेंग।

4 इसलिय अनक प्रकार का _____ -जिसका लिय बाप _____ दत्त हैं कि सब मण को द दो

5 जिस _____ द्वारा जो कार्य कराना चाहो वही कार्य सफलता रूप में दिखाई द - ऐसी _____ अनुभव करत हो?

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करा-

- 1 :- कर्म-इन्द्रियों का रस में मस्त हो जाना उसको भी विकारी कहेंगा॥
- 2 :- नालंज की अथॉरटी संपावरफुल स्वरूप कहाँ तक रहता है?
- 3 :- सब बाप की जिम्मवारी है, मणी जिम्मवारी नहीं, इस स्मृति संपसमर्थी बन जाओ।
- 4 :- योग और ज्ञान द्वारा जो अनुभव की प्राप्ति होती है उस अनुभव की अन्चली का प्यास हैं।
- 5 :- शिकायतों को रूहानियत में बदली करो, तब संगमयुग का सुखों को अनुभव करेंगा॥

QUIZ ANSWERS

प्रश्न 1 :- बाबा नतीन परहज कौन सी बताई है?

उत्तर 1 :- बाबा नतीन परहज बताई है :-

① पहली परहज़ - 'एक बाप दूसरा न कोई' - इसी स्मृति में और समर्थी में रहना,

② दूसरी परहज़ - बाप न०तो अधिकार दिया है अपन०आप का मालिक बनन०का व रचयिता-पन का लकिन रचयिता बनन०का बजाय स्वयं को रचना अर्थात् दह समझ लख०हैं।

③ तीसरी परहज़ - बाप द्वारा सबका 'ट्रस्टी' बन०हो? इस तन का भी ट्रस्टी हो, मन अर्थात् संकल्प का भी ट्रस्टी, लौकिक व अलौकिक जो प्रवृत्ति मिली है उसमें भी ट्रस्टी हो, लकिन ट्रस्टी का बजाय गृहस्थी बन जात०हो।

प्रश्न 2 :- सबस०कड़ी परहज़ क्या है?

उत्तर 2 :- बाबा न०सबस०कड़ी परहज़ बताई है कि :-

① अपन०को यह कह कर धोख०में रखत०हैं कि मैं तो हूँ ही शिव बाबा का, और मशा है ही कौन?

② लकिन प्रैक्टिकल में ऐसा स्मृति-स्वरूप हो जो संकल्प में भी एक बाप का सिवाय दूसरा कोई व्यक्ति व वैभव, सम्बन्ध-सम्पर्क वा कोई साधन स्मृति में न आय॥ यह है कड़ी अर्थात् मुख्य परहज़।

प्रश्न 3 :- स्मृति का बदल०समर्थी कब बदल जाती है?

उत्तर 3 :- बाबा न०समर्थी बदलन०का लिय०बताया है कि :-

① अलबल्ल०होन०का कारण, मन-मत का कारण, वातावरण का प्रभाव का कारण या संगदोष का कारण निरन्तर नहीं रह सकत॥

② जितना अटक्शन दक्षा चाहिए उतना नहीं दक्ष०हैं। अल्पकाल का लिए फुल अटक्शन रखत०हैं फिर धीर॥धीर॥'फुल' खत्म हो, अटक्शन हो जाता है। उसका बाद अटक्शन अनक प्रकार का टक्शन में चला जाता है।

③ परिस्थितियों व परीक्षाओं-वश अटक्शन बदल टक्शन का रूप हो जाता है। इसी कारण जैस०स्मृति बदलती जाती है तो समर्थी भी बदलती जाती है।

प्रश्न 4 :- हम माया का आग०अधीन कब बन जात०है?

उत्तर :- बाबा न०इसका मुख्य कारण बताया है कि :-

① जब रचयिता-पन भूलत०हो तब माया अर्थात् दह-अभिमान तुम रचयिता का ऊपर रचयिता बनती है अर्थात् अपना अधिकार रखती है।

② रचयिता पर कोई अधिकार नहीं कर सकता, विश्व का मालिक का ऊपर कोई मालिक नहीं बन सकता। माया का आग०रचना बन जात०हो और अधीन बन जात०हो।

प्रश्न 5 :- ट्रस्टीपन भूलन का क्या कारण है?

उत्तर 5 :- बाबा न इसका कारण बताया है कि :-

① जब गृहस्थी बन जात हो तो मक्षण का अनक प्रकार का बोझ हो जात हैं। सबस रॉयल रूप का बोझ है - वह 'मशी जिम्मवारी है इसको तो निभाना ही पड़णा' और कोई गृहस्थी ही तो अपनी कर्म-इन्द्रियों का वश हो अनक रस में समय गँवान का गृहस्थी तो बहुत हैं।

② आज कन-रस वश समय गँवाया, कल जीभ-रस वश समय गँवाया। ऐस गृहस्थी में फंसन का कारण ट्रस्टीपन भूल जात हो।

FILL IN THE BLANKS:-

{ बोझ, गृहस्थी-पन, चक, शक्ति, डायरक्षण, परिवर्तन, अथॉरटी, चञ्ज, राहत }

1 कई बच्च बापदादा स रूह-रूहान करत हुए यह एक बात बार-बार कहत हैं कि ____ करत हैं, लकिन अपन को ____ नहीं कर पात।

चक / चञ्ज

2 अब 63 जन्मों का ____ का संस्कार छोड़ो।

गृहस्थी-पन

3 यह रोना चिल्लाना रूह- रूहान में ____ हो जायगा। रूह-रूहान द्वारा रूहों में ____ भर सकेंगा।

परिवर्तन / राहत

4 इसलिये अनक प्रकार का ____ -जिसका लिये बाप ____ दत्त हैं कि सब मरण को ददो

बोझ / डायरक्शन

5 जिस ____ द्वारा जो कार्य कराना चाहो वही कार्य सफलता रूप में दिखाई द- ऐसी ____ अनुभव करत हो?

शक्ति / अर्थारक्षी

सही गलत वाक्यो को चिन्हित कर- 【✗】 【✓】

1 :- कर्म-इन्द्रियों का रस में मस्त हो जाना उसको भी विकारी कहेंगा। 【✗】

कर्म-इन्द्रियों का रस में मस्त हो जाना उसको भी गृहस्थी कहेंगे॥

2 :- नालंज की अथॉरटी सॉपॉवरफुल स्वरूप कहाँ तक रहता है? 【✓】

3 :- सब बाप की जिम्मवारी है, मशी जिम्मवारी नहीं, इस स्मृति सॉसमर्थी बन जाओ। 【✗】

सब बाप की जिम्मवारी है, मशी जिम्मवारी नहीं, इस स्मृति सॉहल्का बन जाओ।

4 :- योग और ज्ञान द्वारा जो अनुभव की प्राप्ति होती है उस अनुभव की अन्चली का प्यास हैं। 【✓】

5 :- शिकायतों को रूहानियत में बदली करो, तब संगमयुग का सुखों को अनुभव करेंगे॥ 【✓】